

प्रयागराज संदेश

खबर संक्षेप

एकल प्रयागराज द्वारा निशुल्क नेट जाँच शिविर का आयोजन

प्रयागराज। एकल प्रयागराज द्वारा एक निशुल्क नेट जाँच शिविर का आयोजन चाको में स्थित एकल ग्रामोदयान केंद्र पर कराया गया। इस शिविर में एकल के संसद्य ने लैंडोफ डॉक्टर अधिकारी शरण एवं वर्ड ऑफिसर अनुभव शरण एवं डॉक्टर अनुभव और उन्हें आगे के लाइन की भी जाँच कराई गई। इस शिविर में एकल के सभी वरिष्ठ संसद्य और पदधारकारी भौजूद थे। श्री राजकम्हल अवाल, श्रीमती सुमा गौड़, श्रीमती पुषी पोदरा, डॉक्टर अनुभव, निधि गुप्ता, श्रीति अवाल, सुरीम सहय, कीर्ति चावला एवं विजयलक्ष्मी जी के नेतृत्व में इस शिविर का आयोजन किया। पीयुष पांडेय, सुमीर पोदरा, भनान गौड़, आनिका अवाल, ने इसके क्रियान्वयन में पूरा सहयोग दिया।

महानगरीय बस सेवा का संचालन जंझई से प्रयागराज तक प्रांगं

जंझई। जेनरल्स नारसुल द्वारा संचालित महानगरीय सिटी बस का संचालन जो कि अपील तक वारी से प्रयागराज हो रहा था क्षेत्रियों को आगे पर परिवहन विभाग ने सोमवार से बस का संचालन जंझई से कर दिया है। यह बहुत अचूक पर जंझई वारी प्रातापुर पूललुर होते हुए सिविल टाइन प्रयागराज बस के संचालन से क्षेत्रियों में काफी हक्क है।

आरोपी डिप्टी एसपी की गिरफ्तारी पर हाईकोर्ट ने लगाई रोक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यमुना एक्सप्रेस वे विकास प्रांगंकरण के लिए भूमि अधिकारण घोटाले की जांच कर रहे गृही पुलिस के द्विटी एसपी निशंक शर्म की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। शर्म पर घोटाले के आरोपियों को बचाने के लिए हाईकोर्ट ने गजियाबाद की विशेष सीबीआई अदालत को निर्देश दिया है कि उसके लिए एकल प्रयागराज पर रोक लगाए जाए।

कार्यालय ग्राम पंचायत पूराधीसन विकास खण्ड कर्छना प्रयागराज

अल्प कालीन निवादा सूचना

वित्तीय वर्ष 2021-22 में ग्राम पंचायत पूराधीसन विकास खण्ड कर्छना में कराये जाने वाले कार्यों मनरेगा, राज्य वित्त/ 15वा निति, हेंडपर्स मरम्मत व रीवोर, नाली, खंडजा निर्माण व पशुशेड निर्माण, सामुदायिक शौचालय निर्माण व मरम्मत साथ ही अन्य निर्माण कार्य/मरम्मत में प्रयुक्त होने वाली सामग्री के लिए निवादा आमंत्रित की जाती है। विकास खण्ड की पंजीकृत फर्में दिनांक 28-09-2021 से 01-10-2021 तक आवेदन कर सकती है। निवादा दिनांक 02-10-2021 को 12 बजे दिन को ग्राम पंचायत में खोली जायेगी।

संख्या नाम कार्य का नाम अनुमानित लागत अवधि

संख्या	नाम	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	अवधि
1.	पूनम पटेल	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
2.	उर्मिला देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
3.	शैल कुमारी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
4.	अनार कली	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
5.	मंजूषा देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
6.	शीला देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
7.	शीला/फूलचन्द्र	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
8.	गीता देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
9.	गीता/राधेश्याम	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
10.	अमरावती	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
11.	उमा देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
12.	शान्ति देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
13.	मनोरमा	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
14.	अनुसुईया वर्मा	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
15.	सीमा देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
16.	सरोज देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
17.	मुनी देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
18.	विद्योता देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
19.	राम अभिलाष	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
20.	मीरा देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
21.	प्रभावती	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
22.	आभा देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
23.	सुनीता देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
24.	सुनीता/छोटेलाल	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
25.	निर्मला देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
26.	सरोज देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
27.	तृप्ति देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह
28.	लक्ष्मी देवी	पशुशेड	1.18 लाख	1 माह

हंसराज सिंह

ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत पूराधीसन विकास खण्ड कर्छना, प्रयागराज

ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत पूराधीसन विकास खण्ड कर्छना, प्रयागराज

पत्रांक: भेजो/ग्राम पंचायत सचिव/ टेंडर/कोटेशन/2020-21/दिनांक

महेश कुमार

ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत पूराधीसन विकास खण्ड कर्छना, प्रयागराज

पत्रांक: भेजो/ग्राम पंचायत सचिव/ टेंडर/कोटेशन/2020-21/दिनांक

खबर संक्षेप

एकल प्रयागराज द्वारा निशुल्क नेट जाँच शिविर का आयोजन

प्रयागराज। एकल प्रयागराज द्वारा एक निशुल्क नेट जाँच शिविर का आयोजन चाको में स्थित एकल ग्रामोदयान केंद्र पर कराया गया। इस शिविर में एकल के संसद्य समय इस ग्रामीण सेवा के कार्य में दिया। लगभग 110 लोगों ने आपनी अंगीजी की जाँच शिविर कराई और उन्हें आगे के लाइन की भी जाँच शिविर में एकल के सभी वरिष्ठ सदस्य और पदधारकारी भौजूद थे। श्री राजकम्हल अवाल, श्रीमती सुमा गौड़, श्रीमती पुषी पोदरा, डॉक्टर अनुभव, निधि गुप्ता, श्रीति अवाल, सुरीम सहय, कीर्ति चावला एवं विजयलक्ष्मी जी के नेतृत्व में इस शिविर का आयोजन किया। पीयुष पांडेय, सुमीर पोदरा, भनान गौड़, आनिका अवाल, ने इसके क्रियान्वयन में पूरा सहयोग दिया।

योगीराज में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

ग्राम पंचायत विकास खण्ड कर्छना, प्रयागराज

पत्रांक: भेजो/ग्राम पंचायत सचिव/ टेंडर/कोटेशन/2020-21/दिनांक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। टेलरिंग शाप योजना के तहत अनुसंचित जाति के 63 लाभार्थियों को सिलाई मरीजन, स्वास्थ्य रोजगार योजना के तहत अनुसंचित जाति के 34 लाभार्थियों को चेक एवं सामुहिक दुकान योजना के अन्तर्गत अनुसंचित जाति के 03 लाभार्थियों को अधिकार प्रदान किये।

लाभार्थियों को अधिकार प्रदान किये गये

ग्राम पंचायत विकास खण्ड कर्छना, प्रयागराज

पत्रांक: भेजो/ग्राम पंचायत सचिव/ टेंडर/कोटेशन/2020-21/दिनांक



लाभार्थियों को अधिकार प्रदान किये गये

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

प्रदेश एवं एकल प्रदेश में जनता भयमुक्त, दलितों का हो रहा समग्र विकास : रमापति शास्त्री

सम्पादकीय

चीन को चुनौती

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण के जरिए बड़ी खूबसूरती से वैश्विक मामलों पर बोलने के चीन के नैतिक अधिकार पर सवाल उड़ा कर दिया। ध्यान रहे, नए अंतरराष्ट्रीय समीकरणों के लेहाज से चीन का वर्चस्वगादी और आक्रामक रुख ही सभसे ड़ा खतरा माना जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76वें सत्र में वो संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को जो भाषण दिया, वह ऐतिहासिक सिर्फ इसलिए नहीं है कि उसमें अफगानिस्तान, आतंकवाद और कोरोना जैसी चुनौतियों पर बड़ी पष्टता और उतनी ही गंभीरता से भारत का पक्ष रखा गया है। धानमंत्री मोदी के भाषण की अहमियत इस बात में है कि छोटे सलों में उलझने के बजाय इसमें बदलते अंतरराष्ट्रीय समीकरणों की उभरी चुनौतियों को रेखांकित करने की कोशिश की गई और इससे भी बड़ी बात यह कि इन चुनौतियों के पीछे छिपे अवसरों पर हथचानते हुए उसका उपयुक्त इस्तेमाल करने की दूरदर्शिता दरखाई गई है। यह अकारण नहीं है कि प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में भारत को लोकतंत्र की जननी के रूप में चित्रित करते हुए वैश्विक बिरादरी को याद दिलाया कि हमारे देश में लोकतंत्र को हजारें वर्षों की परंपरा है।

हुआरा पका का परपरा है। विविधता हमारे समाज की पारंपरिक विशिष्टता रही है। गमकाज में पारदर्शिता हमारी स्वाभाविक शैली है। और करने की तरफ यह है कि ये कुछ ऐसे बिंदु हैं, जहां चीन मुकाबले में कहीं बड़ा ही नहीं हो सकता। न तो वहां लोकतंत्र है और ना ही प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में ठीक ही कोरोना की उत्पत्ति और वर्ल्ड बैंक के ईज ऑफ इंडिंग बिजनेस इंडेक्स के अंसिलेशन का मुद्दा उठाया। वैश्विक बिरादरी इन दोनों सवालों पर चीनी रुख में पारदर्शिता की कमी से जुझ रही है। दुनिया एक सकती है कि एक तरफ भारत है, जो कारोना की चुनाती से बहुत जूझते हुए भी दूसरे देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराने की तरफ आये ताकि उन्हें उत्तर दिया जाए। उसी तरफ भी है कि ऐसे दोनों देशों को एक दूसरे की

द्वारा जहां मेरी जुटा हुआ है, दूसरी तरफ चान है जो कारोना का अपत्यक्ति की गुरुत्वी को सुलझाने तक में सहयोग देने को तैयार हीं। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण के जरिए बड़ी खबर सूरती से वैश्विक मामलों पर बोलने के चीन के नैतिक अधिकार पर सवाल उठाकर दिया। ध्यान रहे, नए अंतरराष्ट्रीय समीकरणों के लिए लिहाज से चीन का वर्चस्ववादी और आक्रामक रुख ही सबसे बड़ा खतरा माना जा रहा है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र के मंच से ध्यानमंत्री का यह दर्शना महत्वपूर्ण है कि चीन का रुख न केवल अन्य देशों की भौगोलिक सीमाओं और अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों में वरंत्र व्यापारिक गतिविधियों के लिए खतरा बनता जा रहा है। इलिक यह आधुनिकता और प्रगतिशील मूल्यों के भी खिलाफ है।

ऐसे में चीन के साथ सहयोग का दायरा बढ़ाने की कोई भी निश्चिंश उदार वैश्विक मूल्यों को खतरे में डालेगी। इसी बिंदु पर भारत के लिए संभावनाओं के नए द्वारा भी खुलते हैं। निवेश के विवरों से भरपूर एक लोकतांत्रिक और पारदर्शितापूर्ण समाज के और पर भारत बहतर विकल्प के रूप में दुनिया के सामने मौजूद। लोबल सप्लाई चेन में चीन की जगह लेने को भारत तैयार। भारत और वैश्विक समुदाय का यह साथ न केवल भारत के बांकास की दृष्टि से बल्कि सद्व्यवस्था, लोकतांत्रिक और उदार निया सुनिश्चित करने के लिहाज से भी उपयोगी होगा।

पश्चिम और दक्षिण भारत के राज्यों में उच्च प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय

डॉ. हनुमन्त यादव

भारत की छठवीं पंचवर्षीय योजना के समाप्त होने पर भी भारत के सभी सामान्य राज्यों में इन राज्यों द्वारा नियली पायदान पर कायम रहने के कारण प्रो. राजकृष्णा ने अपने आलेख में इन राज्यों को बीमासुर राज्य शब्द से इंगित किया था। बिहार, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के विभाजन के बावजूद बिहार के साथ झारखण्ड तथा मध्यप्रदेश के साथ छत्तीसगढ़ भी निम्न प्रति व्यक्ति आमदनी वाले राज्यों में बने हुए हैं और आगे भी बने रहने की संभावना है। भारत सरकार के साखियकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित राज्यों की घरेलू उत्पाद के 11 अगस्त 2021 को संशोधित जारी आंकड़ों के अनुसार विभिन्न राज्यों की दर्शाई गई स्थिति के संदर्भ पर यहां चर्चा की जाएगी। चर्चा के लिए भारत के राज्यों को तीन भागों में विभाजित किया गया है : पहला सामान्य राज्य, दूसरा, उत्तर-पूर्व के जनजाति बहुल राज्य और तीसरा, दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे केन्द्र शासित राज्य। भारत के सामान्य राज्यों की संख्या 21 है। सबसे पहले राज्य के सकल घरेलू उत्पाद तथा इसके बाद राज्यों की प्रति व्यक्ति आय के बारे में चर्चा की जाएगी। राज्य की निवल घरेलू उत्पाद को जनसंख्या से भाग देने पर प्रति व्यक्ति आय प्राप्त की जाती है।

राज्यों में सबसे अधिक सकल घरेलू उत्पाद महाराष्ट्र राज्य का 26.61 लाख करोड़ रुपये है जो 370 बिलियन डॉलर के समकक्ष है। सकल घरेलू उत्पाद में दूसरा, तमिलनाडु 20.92 लाख करोड़ रुपये, तीसरा, उत्तरप्रदेश 17.05 लाख करोड़ रुपये, चौथा, पश्चिम बंगाल 16.69 लाख करोड़ रुपये, पांचवा, गुजरात 16.48 लाख करोड़ रुपये, छठवां, कर्नाटक 16.29 लाख करोड़ रुपये, सातवां, राजस्थान 10.21 लाख करोड़ रुपये, आठवां, आन्ध्रप्रदेश 9.78 लाख करोड़ रुपये, नौवां, तेलंगाना 9.69 लाख करोड़ रुपये तथा दसवां मध्यप्रदेश 9.09 लाख करोड़ रुपये है। नींवी सकल घरेलू उत्पाद राज्यों में हिमाचल प्रदेश 1.56 लाख करोड़ रुपये तथा गोवा 0.82 लाख करोड़ रुपये है। उत्तर-पूर्व के आदिवासी बहुल राज्यों में सभी का सकल घरेलू उत्पाद 0.60 लाख करोड़ रुपये से नीचा है। दिल्ली राज्य का सकल घरेलू उत्पाद 7.98 लाख करोड़ रुपये और चंडीगढ़ का 0.42 लाख करोड़ रुपये है।

भारत की प्रति व्यक्ति निवल घरेलू उत्पाद अर्थात् प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय 1,63,080 रुपये है, जो 2191 यूएस डॉलर के बराबर है। इस आय पिछले वर्ष की तुलना में अधिक है। इस प्रकार कोरोना महामारी प्रसार के बावजूद भारत की प्रति व्यक्ति आय अधिक रही है। भारत के 21 सामान्य राज्यों में सबसे अधिक प्रति व्यक्ति आय वाले 5 राज्य हैं : गोवा, हरियाणा, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु। गोवा प्रति व्यक्ति आय 4,35,960 रुपये है जो 7032 यूएस डॉलर के समविकल्प है और प्रति व्यक्ति आय में ब्राजील की प्रति व्यक्ति आय के बराबर प्रति व्यक्ति आय में दूसरे स्थान पर हरियाणा है, जिसकी प्रति व्यक्ति आय 2,39,535 रुपये है जो 3,764 यूएस डॉलर के समकक्ष तेलंगाना की प्रति व्यक्ति आय 2,26,632 रुपये 3368 यूएस डॉलर के समकक्ष है। कर्नाटक की प्रति व्यक्ति आय 2,26,796 रुपये है, 3358 यूएस डॉलर के मूल्य के बराबर है। तमिलनाडु राज्य की प्रति व्यक्ति आय 2,25,106 रुपये है, जो 3600 यूएस डॉलर के समकक्ष है। प्रति व्यक्ति आय में भारत के राज्यों में छठवें स्थान पर केरल केरल के बाद क्रमशः गुजरात, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश आंध्रप्रदेश, और पंजाब राज्य हैं, इन सभी राज्यों की प्रति व्यक्ति भारत की प्रति व्यक्ति आय 1,63,080 रुपये से अधिक है। प्रति व्यक्ति आय में केरल 2,21,904 रुपये, गुजरात 2,13,936 रुपये उत्तराखण्ड 2,02,895 रुपये, और महाराष्ट्र 2,02,130 रुपये है। लाख रुपये से नीची एवं 1 लाख रुपये से अधिक प्रति व्यक्ति राज्य ये हैं, इनकी प्रति व्यक्ति आय इस प्रकार है- हिमाचल प्रदेश 1,93,286 रुपये, आंध्रप्रदेश 1,70,215 रुपये, पंजाब 1,71,359 रुपये भारत की प्रति व्यक्ति आय से नीची आय वाले राज्य इस प्रकार हैं- पश्चिम बंगाल 1,21,267 रुपये, राजस्थान 1,09,886 रुपये, ओडिशा 1,09,330 रुपये और छत्तीसगढ़ 1,04,493 रुपये हैं। 1 लाख रुपये से नीची प्रति व्यक्ति आय वाले 5 राज्य इस प्रकार हैं - मध्यप्रदेश 98,418 रुपये, असम 86,801 रुपये, झारखण्ड 75,587 रुपये, 3 उत्तरप्रदेश 62,652 रुपये हैं।

य मध्यभारत के राज्यों की प्रति व्यक्ति आय सबसे नीची है। उत्तर-पूर्व के राज्यों में सिकिंग की संस्कृति की भूटान के समान सनातन मानी जाती है और राज्य की प्रति व्यक्ति आय को गोवा के समान इन राज्यों में शीर्ष पर है। सिकिंग की प्रति व्यक्ति आय 4,24,454 रुपये है जो 6545 यूएस डॉलर के बराबर होती है। उत्तरपूर्व के जनजाति बहुल राज्यों में मिजोरम की प्रति व्यक्ति आय 1,87,327 रुपये, अरुणांचल प्रदेश 1,69,742 रुपये, त्रिपुरा 1,29,995 रुपये, नागालैंड 1,20,518 रुपये, मेघालय 82,182 रुपये और मणिपुर 84,746 रुपये है। राज्यों के तीसरे वर्ग में देश की राजधानी दिल्ली सबसे बेहतर स्थिति में है। दिल्ली की प्रति व्यक्ति आय 3,54,004 रुपए है। चंडीगढ़ की प्रति व्यक्ति आय 3,30,015 और पुडुचेरी की प्रति व्यक्ति आय 2,21,467 रुपए है। 2019-20 की तुलना में 2020-21 वर्ष में कोरोना के प्रभाव के कारण औद्योगिक उत्पादन में कमी आने के कारण हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, झारखण्ड और उत्तरप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में कमी आई है। दूसरी ओर कोरोना संक्रमण के होते हुए भी तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार राज्यों में प्रति व्यक्ति आय पिछले वर्ष की तुलना में चालू वर्ष में अधिक रही है। वर्ष 2021-22 में कोरोना के प्रकार में कमी आने के कारण औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र के उत्पादन में तेजी आने के कारण सभी राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद बढ़ने से राज्यों के प्रति व्यक्ति आय बढ़ने की संभावना है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि पश्चिम भारत और दक्षिण भारत के राज्य उच्च प्रति व्यक्ति आय वाले राज्यों के रूप में दशकों से बने हुए हैं और आगे भी उनके इस श्रेणी में बने रहने की संभावना है। दूसरी ओर बिहार, मध्यप्रदेश, असम, राजस्थान, ओडिशा, उत्तरप्रदेश ये राज्य 40 साल की विकास योजनाओं के बावजूद निम्न प्रति व्यक्ति वाले राज्य बने हुए हैं। भारत की छठवीं पंचवर्षीय योजना के समाप्त होने पर भी भारत के सभी सामान्य राज्यों में इन राज्यों द्वारा निचली पायदान पर कायम रहने के कारण प्रो. राजकृष्णा ने अपने आलेख में इन राज्यों को बीमारु राज्य शब्द से इंगित किया था। बिहार, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के विभाजन के बावजूद बिहार के साथ झारखण्ड तथा मध्यप्रदेश के साथ छत्तीसगढ़ भी निम्न प्रति व्यक्ति आमदनी वाले राज्यों में बने हुए हैं और आगे भी बने रहने की संभावना है।

दक्षेस अपनी सार्थकता सिद्ध नहीं कर पाया, अब जन-दक्षेस बनना चाहिए

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

सरकारें लड़ती-झगड़ती रहें तो भी लोगों के बीच बातचीत जारी रहे। यह इसलिए जरूरी है कि दक्षिण और मध्य एशिया के 16-17 देशों के लोग एक ही आर्य परिवार के हैं। उनकी भाषा, भूषा, भोजन, भजन और भेषज अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन उनकी संस्कृति एक ही है। दक्षेस (सार्क) के विदेश मंत्रियों की जो बैठक न्यूयार्क में होने वाली थी, वह स्थगित हो गई है। उसका कारण यह बना कि अफगान सरकार का प्रतिनिधित्व कौन करेगा सच पूछा जाए तो 2014 के बाद दक्षेस का कोई शिखर सम्मेलन वास्तव में हुआ ही नहीं। 2016 में जो सम्मेलन इस्लामाबाद में होना था, उसका आठ में से छह देशों ने बहिष्कार कर दिया था, क्योंकि जम्मू में आतंकवादियों ने उन्हीं दिनों हमला कर दिया था। नेपाल अकेला उस सम्मेलन में सम्मिलित हुआ था, क्योंकि नेपाल उस समय दक्षेस का अध्यक्ष था और कानूनमादी में दक्षेस का कार्यालय भी है। दसरे शब्दों में इस-

समय दक्षेस बिल्कुल पंग हुआ पड़ा है। यह 1985 में बना था लेविं
अब 35 साल बाद भी इसकी ठोस उपलब्धियां नगण्य ही हैं, हालांकि
दक्षेस-राष्ट्रों ने मुक्त व्यापार, उदार वीजा-नीति, पर्यावरण-रक्षा, शिक्षा,
चिकित्सा आदि क्षेत्रों में परस्पर सहयोग पर थोड़ी बहुत प्रगति जारी
की है लेकिन हम दक्षेस की तुलना यदि यूरोपीय संघ और 'आसिया'
से करें तो वह उत्साहवर्धक नहीं है। फिर भी दक्षेस की उपयोगिता
इंकार नहीं किया जा सकता है। इसे फिर से सक्रिय करने
भरसक प्रयत्न जरूरी है। जिन दिनों 'सार्क' यानि 'साथ एशिया'
एसोसिएशन ऑफ रीजनल कॉऑपरेशन' नामक संगठन का निम्न
हो रहा था तो इसका हिंदी नाम 'दक्षेस' मैंने दिया था। 'नवभारा
टाइम्स' के एक संपादकीय में मैंने 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग
संघ' का सक्षिप्त नाम 'दक्षेस' बनाया था। उस समय यानि अब
लगभग 40 साल पहले भी मेरी राय थी कि दक्षेस के साथ-साथ ए
जन-दक्षेस संगठन भी बनना चाहिए यानि सभी पड़ासी देशों
समान विचारों वाले लोगों का संगठन होना भी बहुत ज़रूरी है।

बातचीत जारी रहे। यह इसलिए जरूरी है कि दक्षिण और मध्य एशिया के 16-17 देशों के लोग एक ही आर्य परिवार के हैं। उनकी भाषा, भूषा, भोजन, भजन और भेषज अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन उनकी संस्कृति एक ही है। अराकान (म्यांमार) से खुरासान (ईरान) और त्रिविट्युप (तिब्बत) से मालदीव के इस प्रदेश में खनिज सपदा के असीम भंडार भरे हुए हैं। यदि भारत चाहे तो इन सारे पड़ोसी देशों को कुछ ही वर्षों में मालामाल किया जा सकता है और करोड़ों नए रोजगार पैदा किए जा सकते हैं। यदि हमारे ये देश यूरोपीय राष्ट्रों की तरह संपन्न हो गए तो उनमें स्थिरता ही नहीं आ जाएगी बल्कि यूरोप के राष्ट्रों की तरह वे युद्धमुक्त भी हो जाएंगे। पिछले 50-55 वर्षों में लगभग इन सभी राष्ट्रों में मुझे दर्जनों बार जाने और रहने का अवसर मिला है। भारत के लिए उनकी सरकारों का रखेया जब-तब जो भी रहा हो, जहां तक इन देशों की जनता का सवाल है, भारत के प्रति उनका रखेया मैत्रीपूर्ण रहा है। इसीलिए भारत के प्रबुद्ध और संपन्न नागरिकों को जन-दक्षेस के गठन की पहल तुरंत करनी चाहिए। वह टक्षेस के नड़व्वे पर टहला सिट देया।

पाक को कौन समझा ए, बच्चा शेर करता है और बाप का अनुभव बोलता है

अनुराग मिश्र

जैसे अपने यहां कहा जाता है न- सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। चीन से भारत का बड़ा द्विपक्षीय कारोबार है, कई तरह के हमारे हित जुड़े हैं। पूर्वी लद्धाख प्रकरण के बाद भारत ने जहां भी संभव हुआ, चीन पर नकेल कसी है लेकिन इस तरह वैश्विक मंच से चीन का नाम लेना सीधे तौर पर टेंशन बढ़ाने वाला कदम होता। ऐसे में प्रथानमंत्री ने इशारों में अपनी बात कही। उन्होंने समंदर को 'हमारी साझा विरासत' बताते हुए कहा कि हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि समुद्री संसाधन का सिर्फ उपयोग करना है, उनका दुरुपयोग या अति दोहन नहीं करना है। उन्होंने कहा, 'हमारे समंदर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की जीवन रेखा हैं। हमें विस्तार और बढ़िश्कार की दौड़ से उनकी सुरक्षा करनी चाहिए। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को नियम आधारित विश्व व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए एक सुर में आवाज उठानी होगी।' यह कहकर उन्होंने उन देशों को भी साध लिया जो दक्षिण चीन सागर और अन्य क्षेत्रों में चीन के बढ़ते प्रभाव से खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। पीएम यूएन के मंच पर पहुंचे तो एक आम धारणा ऐसी बनी थी कि वह पाकिस्तानी पीएम के सगालों के जगवां देंगे, लेकिन अंतर क्या रह जाता। 65 घंटे के सफर में 20 बैठकें करने वाले पीएम ने कोरोना काल में भारत की अहम भूमिका को खेंखित किया। मानवता के प्रति अपने दायित्व को समझते हुए उन्होंने बताया कि कैसे भारत ने गरीब और विकासशील देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराई। संयुक्त राष्ट्र महासभा को जानकारी देते हुए पीएम ने कहा कि भारत ने दुनिया का पहला डीएनए टीका विकसित कर लिया है जिसे 12 साल की आयु से ज्यादा के सभी लोगों को दिया जा सकता है। भारत के वैज्ञानिक नाक से दिए जाने वाले कोरोना के टीके के निर्माण में जुटे हैं। एक बार

उन्हाँने युग्मांश का निराकाश का उत्तर भासू भासू की उत्पादन की
का न्योता भी दिया। इस तरह पीएम ने कोरोना वैक्सीन जैसे बड़े मस्त
पर दुनिया के सामने भारत का मजबूती से पक्ष रखा, जो भारत की सभी
बढ़ान गाला था। पीएम मोदी ने यूएन के मंच से यूएन को भी सुनाने
कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने दो टूक कहा कि अगर समय के साथ,
अंतरराष्ट्रीय संस्था ने सुधार नहीं किए तो उसकी प्रासंगिकता खत्म
जाएगी। उन्होंने सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत
दमदार दावेदारी एक बार फिर पेश की। चाणक्य के शब्द दोहराते
उन्होंने वैधिक समाज से कहा कि जब सही समय पर सही कार्य
किया जाता, तो समय ही उस कार्य की सफलता को समाप्त कर दे
है। उन्होंने कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र के बारे में तमाम तरह के सव
उठाए जा रहे हैं। किसी भी नेता के लिए इस तरह से मंच के खिलाफ
बोलना कोई छोटी बात नहीं है, आज भारत की भूमिका दुनिया में
नया ऐसे नवीनी है, जिससे यह संघर्ष हो गया है।

जब जरा इन्हाँ दाना के प्रति हमदर्दी जातो है उन्होंने दुनिया से उसे समर्थन और सहयोग देने का आहान किया। एक देश जिसके माली हालत इतनी खराब है कि कार और भैंसों की नीलामी करनी पड़ रही है, वह मुल्क संयुक्त राष्ट्र के मंच से अपने डोसी देश में भुखमरी और गरीबी पर चिंता जता रहा है। वैसे, किसी देश के हित में बोलना बुरा नहीं है, लेकिन यहां इमरान के मुह से निकल रहे शब्दबाण तालिबान के लिए रहम जुटाने के लिए थे। कश्मीर राग और तालिबान प्रेम के साथ ही इमरान ने इस्लाम और मुसलमानों का मसीहा भी बनने की कोशिश की जो वह पीएम बनने के बाद से ही आजमाते आ रहे हैं। यूनून में इस्लामोफोबिया का जिक्र करना कोई नया नहीं है। इमरान पीएम बनने के बाद हर बार यह शिगूफा छोड़ते आ रहे हैं। वह करें भी तो क्या करें, बदहाल देश में बताने के लिए कुछ है नहीं, इस्लामिक कट्टरपंथियों की पनाहगाह बन चुके मुल्क में खेरात पर इकॉनमी चल रही है। अमेरिका भी सब दांव समझ चुका है। ऐसे में पाकिस्तान की बची खुची उम्मीद मुस्लिम देश ही है, जो इस मुस्लिम बहुल देश को कुछ दे सकते हैं। ऐसे में इमरान के इस्लामोफोबिया के जिक्र के पीछे की मशा समझी जा सकती है। दुनिया में इसीके बाद मुस्लिम आबादी सबसे ज्यादा है। तीसरे नंबर पर हिंदू आते हैं। लेकिन पाकिस्तान के हुक्मरान यह भूल जाते हैं कि उसकी जनसंख्या के बराबर मुसलमान भारत में रहते हैं और जैसा कि स्नेहा दुबे ने भी इमरान और पाकिस्तान की पूरी आवाम को सुनाया कि उनके यहां तो टॉप पोस्ट पर अल्पसंख्यकों को रोकने के लिए कानून बना दिया गया है लेकिन भारत में अल्पसंख्यक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और आर्मी चीफ जैसी टॉप पोस्ट पर पहुंच चुके हैं। समझना पाकिस्तान को है रह बार शोर करके बैंडजर्टी झ़लनी है या गंभीरता दिखाते हुए

तोड़-तोड़ के बंधनों को देखो बहने आती है

Page 1

औरत के वजूद से बंधी रस्मों की रस्सियाँ के बल खोल उसे आजादी की ओर बढ़ाने का कमला ने उसका हाथ थामा, तो उसकी गरमाहट से न जाने कितने चेहरों पर मुस्कुराहटे तैरने लगीं। गुलदस्ते में सजे फूलों के तमाम रंगों की मानिन्द कमला भसीन की शख्सियत के भी अलग-अलग रंग थे। एक समाजी कारकुन, कवि, शायर, कहानीकार कमला हिंदुस्तान में महिला आंदोलन की झड़ेंरवां थीं। कमला यह बेहतर जानती थीं कि उबलते पानी में परछाई नहीं दिखती। इसलिए उन्होंने जेहनों में जड़ जमाए बैठी गैरबराबरी पर बोलने के लिए जो रास्ता चुना, वह बहुत सहज, सरल और ऐसा चुटीला था कि सुनने वाले के दिल पर असर छोड़ता और अङ्गियल से अङ्गियल इसान भी उनकी बातों का कायल हो जाता। मसलन, दिल्ली में एक ट्रेनिंग प्रोग्राम में एक पुरुष कमला की बातों से असहमत होता रहा। शायद वह निजी अनुभव से परेशान था। लंच ब्रेक में कमला ने बड़े प्यार भरे अंदाज में उसके कंधे पर हाथ रख मुस्कुराते हुए कहा, 'मियां, लड़ाई औरत बनाम मर्द की नहीं, लड़ाई तो पितृसत्ता से है हुजूर, जिसन खुद मर्दों को बड़ा नुकसान पहुंचाया। उसे रोने नहीं दिया उसके इमोशंस को रोका उस पर कमाने का बोझ

लादा। नामर्दगी के दबाव में ही वह शिलाजीत ढूँढ़ता फिरता 'घर का काम कौन करे', इस मुद्दे पर कमला का सहज सा जवाब एक सरल से सगाल के रूप में सामने आया, 'क्या घर का काम करने के लिए बच्चेदानी की जरूरत है' सुनने वाले आशय समझ अवाक रह गए। पहली दफा जब उन्होंने लखपति और करोड़पका मतलब पूछा तो थोड़ा अटपटा सा लगा। समझ नहीं आया मतलब है क्या फिर वह खुद ही बोली, 'लखपति लाख रुपये मालिक, करोड़पति करोड़ रुपये का मालिक, और फिर औरत पति तो औरत का मालिक हुआ ना' इतनी गहरी बात इतनी आसानी से कही जिस विषय पर चिपक कर रहा था। यह शारीरिक अंदर

अरब महिलाओं ने इसे दोहराया था, जो कि एक रेकॉर्ड है। उनकी उर्दू जुबान कुछ लखनवी और पंजाबी टच लिए बहुत साफ और रवां थीं, उच्चारण की गलती कभी उनसे नहीं हुई। अपनों के बीच हमेशा वह हिंदुस्तानी में ही बोलना पसंद करती थीं। विदेश से आला तालीम लेने के बाद भी अंग्रेजी के अहंकार से वह मुक्त रहीं। नारीवाद की प्रबल पक्षक्षर कमला ने महिला आरक्षण के सवाल पर कहा कि सिर्फ महिला के संसद में आने से चीजें बेहतर नहीं होंगी। नारीवादी महिलाएं स्त्री-पुरुष समानता की बात करेंगी, तभी हालात बदलेंगे। बच्चे को बराबरी का इंसान बनाने के लिए उन्होंने बहुत कुछ लिखा। वह कहती हैं, 'तुम कपड़े पहनते हो हाँ जी, हाँ जी। तुम कपड़े धोते हो ना जी, ना जौ। कपड़ों की हाँ, धोने की ना, ऐसे कैसे चले जहाँ' बलात्कार पर औरत की इज्जत लुटने का हाहाकार मचाने वालों को एक बार उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'सारी कौम की इज्जत योनि में लाकर क्यों रख देते हो बलात्कार से तो इज्जत औरत की नहीं, मर्द की लुटती है। कमला का लिखा यह मशहूर शेर, 'रौंद सकते हो तुम फूल सारे चमन के, पर बहारों का आना नहीं रोक सकते', इंतेहापसंद ताकतों को बराबरी पर आधारित समाज बनाने के लिए आगाह करता है। चिढ़े दूधिया चांदी से चमकते बालों वाली हमारी पुरखिन को हम खिराजे अकीदत पेश करते हैं, उन्हें सलाम करते हैं। कमला भसीन की विरासत को आगे ले चलने के लिए इंसाकफसंद लोगों का जन सैलाब तैयार हो चुका है, जो उस जनन को आगे ले जाने के लिए बादबाद है।

